Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 9, Sept - 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Received on : 30/08/2021 **Accepted on : 15/09/2021** **Publication Date: 30/09/2021**

नालन्दा विश्वविद्यालय का ऐतिहासिक अनुशीलन

डॉ. कन्हैया सिंह
पी.डी.एफ. प्राचीन इतिहास विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर वि.वि. गोरखपुर उ.प्र.
Email - dr.kanhaiya459@gmail.com

शोध-सारांश : छठीं शदी ईस्वी पूर्व में बौद्ध एवं जैन धर्मों के उदय के उपरान्त इन धर्मों के भी शैक्षिक संगठन स्थापित हुए। महात्मा बुद्ध ने अपने अनुयायियों की बौद्धिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था की। पूर्व अध्ययन से विदित है कि प्रव्रज्जा ग्रहण के उपरान्त प्रारम्भ में भिक्षुओं को वृक्षमूल ही आवास के रूप में ग्रहण करना पड़ता था। अरण्य के अतिरिक्त पर्वतकन्दराओं, श्मशान भूमि और पुआल के ढेर आदि पर भिक्षुओं के विश्राम विहित थे। विकासक्रम में जब भिक्षुओं की संख्या में वृद्धि हुई तब बौद्ध विहार आवास के रूप में ग्रहण किये गये और संघीय जीवन व्यवस्थित हुआ। बौद्ध विहार जो प्रारम्भ में धार्मिक चिन्तन और मनन के केन्द्र थे, कालान्तर में ऐसे शिक्षा केन्द्रों के रूप में विकसित हुए जो ज्ञान की विविध परम्पराओं के संरक्षण के लिए विख्यात थे। इन बौद्ध शिक्षा केन्द्रों में बौद्ध धर्म ग्रन्थों के अतिरिक्त वैदिक धर्मग्रन्थ, चिकित्साशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, व्यवहार जैसे विषयों की शिक्षा दी जाने लगी।

गुप्तोत्तर काल में कतिपय बौद्ध विहार शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र होने के कारण राजकीय संरक्षण और व्यापारियों के आर्थिक अनुदान के कारण विशिष्ट शिक्षा केन्द्रों के रूप में विकसित हुये तथा विश्वविद्यालयी-गरिमा से युक्त हुये। चूंकि इन महाविहारों में भारत के सुदूरस्थ क्षेत्रों से तथा मध्य एशिया, चीन और पूर्वी द्वीप समूहों से शिक्षार्थी अध्ययन के लिए आते थे। अतः इन्हें विश्वविद्यालय कहना सर्वथा युक्तिसंगत है। इस प्रकार के उच्च शिक्षा केन्द्रों में नालन्दा, विक्रमशिला और वल्लभी के शिक्षा केन्द्रों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनमें प्रथम दो भारत के पूर्वी क्षितिज पर क्रमशः विहार एवं बंगाल में स्थित थे। जबकि तीसरा विद्या केन्द्र सुदूर पश्चिम में आधुनिक गुजरात प्रान्त में स्थित था। नालन्दा एवं वल्लभी विद्या केन्द्रों के सन्दर्भ में हमें विस्तृत सूचना सातवीं शताब्दी में भारत की यात्रा करने वाले चीनी यात्री युवान-च्वांग और इत्सिंग के यात्रा विवरण में मिलता है। जबकि विक्रमशिला विश्वविद्यालय के सम्बन्ध में हमें चीनी स्रोतों के अतिरिक्त तिब्बती स्रोतों से भी महत्वपूर्ण सूचनायें मिलती हैं।

बीज वाक्य : नालन्दा, शिक्षा, बौद्ध विहार, धर्मगंज, हवेनसांग, रत्नाकर, शीलभद्र, वर्षावास, मक्खलीपुत्त गोशाल, ब्रह्मजालसुत्त, फाह्यान, धर्मस्थान, चीन ।

उद्देश्य : शिक्षा का मूल उसके हुनर पर निर्भर है। अर्थात शिक्षा वही है जो हमें सीखने के लिए प्रेरणा प्रदान करे। यह तत्व धर्म, काल, मजहब आदि से अलग मानवमात्र के कल्याण हेतु उपयोगी एवं आवश्यक है। इस शोध-पत्र में बौद्धकालीन प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के बारे में चर्चा किया गया है जिसमें यह बताने का प्रयास किया गया कि यह विश्वविद्यालय भले ही बौद्ध धर्म से प्रेरित होकर बनाया गया हो परन्तु उसमें विविध ग्रन्थो, आदर्शो, शिल्पकलाओं, विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान आदि के माध्यम से भारतीय शिक्षा व्यवस्था का मूल रूप प्रस्तुत किया गया।

विस्तृत शोध-पत्र

नालन्दा आधुनिक विहार प्रान्त में पटना-कलकत्ता रेलवे लाइन पर स्थित बख्तियारपुर रेलवे स्टेशन से थोड़ी दूर पर स्थित है। यह अति प्राचीनकाल से बौद्ध एवं जैन धर्म से सम्बन्धित रहा है। बौद्ध ग्रन्थ दीघनिकाय के ब्रह्मजालसुत्त में भगवान बुद्ध द्वारा प्रायः नालन्दा से राजगृह जाने का उल्लेख है। मज्झिम निकाय के अनुसार यह राजगृह के समीप स्थित छोटा सा ग्राम था1 जैनग्रन्थों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि महावीर ने यहाँ चौदह वर्षावास किया था तथा यहीं मक्खलिपुत्त गोशाल से उनकी भेंट हुयी थी। भगवान बुद्ध ने भी लगभग सत्रह वर्ष यहाँ वर्षावास किया था। राधा कुमुद मुकर्जी अशोक को ही नालन्दा विहार का प्रथम

संस्थापक मानते हैं। ऐसा जान पड़ता है कि गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल तक एक विख्यात विद्या केन्द्र के रूप में नालन्दा का महत्व स्थापित नहीं हो सकता था। चीनी यात्री फाह्यान जो पांचवी शताब्दी ईस्वी के पूर्वाद्ध भारत आया था। वह नालन्दा विश्वविद्यालय का उल्लेख नहीं करता किन्तु वह 'नाल' नामक ग्राम का उल्लेख करता है जो सारिपुत्र के जन्मभूमि के निकट स्थित था। तारानाथ के अनुसार नालन्दा शारिपुत्र की जन्मभूमि थी तथा अशोक ने यहाँ शारिपुत्र की स्मृति में एक स्तूप तथा विहार का निर्माण कराया था।[2]

फाह्यान के लगभग दो सौ वर्ष बाद सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जब चीनी यात्री युवान-च्वांग भारत आया तब नालन्दा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का विश्वविद्यालय हो चुका था। युवान-च्वांग के अनुसार इस विश्वविद्यालय की स्थापना शक्रादित्य नामक नरेश द्वारा की गयी थी।[3]

शक्र शब्द का पर्याय है। मुद्राशास्त्र से ज्ञात होता है कि महेन्द्रादित्य कुमारगुप्त प्रथम की प्रिय उपाधि थी। अतः शक्रादित्य की पहचान प्रायः कुमारगुप्त के साथ की गयी है। शक्रादित्य के उपरान्त बुद्धगुप्त ने इस विश्वविद्यालय के कलेवर वृद्धि में सहयोग प्रदान किया। उसके बाद तथागत गुप्त, बालादित्य, वज्र तथा हर्ष आदि ने नालन्दा में शिक्षा के विस्तार हेतु अनेक भवन बनवाये तथा विश्वविद्यालय की आर्थिक सहायता प्रदान की।4 आगे चलकर पालवंशी नरेशों ने भी इस विद्या केन्द्र को संरक्षण दिया। पाल-शासकों के अभिलेख भी यहीं से मिले हैं जिसमें इसे महाविहार कहा गया है। धर्मपाल के शासनकाल में प्रशान्तमित्र नामक भिक्षु ने प्रज्ञापारमिता का गहन अध्ययन िकया। उसने तन्त्र के क्रिया पक्ष एवं योग पर बल दिया तथा तान्त्रिक बौद्ध की परम्परा के अनुसार उसने 'जामन्तक' सिद्धि प्राप्त की। धर्मपाल के पुत्र देवपाल के मुद्गिगिरि (मुंगेर) से जारी किये गये ताम्र-पत्र के अनुसार उसके शासन काल में सुवर्ण द्वीप के महाराज बल पुत्र देव द्वारा निर्मित विहार की व्यवस्था हेतु पांच ग्रामों का दान देवपाल ने किया था। घोसरवा अभिलेख के अनुसार देवपाल ने नालन्दा के निर्माण कार्य की देख-रेख हेतु वीरदेव नामक एक भिक्षु को नियुक्त किया था। नालन्दा से प्राप्त एक अभिलेख में यशोवर्मनदेव नामक शासक के एक मंत्री द्वारा नालन्दा विद्या केन्द्र को दिये गये दान का उल्लेख है। अभिलेख के अनुसार इस विश्वविद्यालय के भिक्षुओं को कई वर्षों तक भोजन दिया जा सकता था।[5] इत्सिंग के विवरण से भी यह ज्ञात होता है कि वहाँ के भवन अपनी ऊँचाई के कारण बादलों को छूते हुये से लगते थे।

नालन्दा के पुरावशेष :

नालन्दा महाविहार बारहवीं सदी में बख्तियार खिलजी के आक्रमण के परिणामस्वरूप नष्ट हुआ। यहाँ के बहुत से भिक्षु भागकर नेपाल और तिब्बत में शरण लिये। 1870 ई0 में ब्राडले 1916 ई0 में स्पूनर और इसके बाद हीरानन्द शास्त्री ने यहाँ उत्खनन कार्य कराया। भिक्षु विद्यार्थियों के रहने के लिए विहारों का निर्माण किया गया। मन्दिर ध्यान और उपासना के केन्द्र प्रतीत होते हैं।[6] ये विहार और मन्दिर नालन्दा की स्थापत्य-योजना के दो पक्ष जान पड़ते हैं। इन विहारों में शौचालय की व्यवस्था नहीं थी। विहारों के छोटे कमरों में एक या दो विद्यार्थियों के रहने की व्यवस्था थी। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए पत्थर की चौकी, दीपक और पुस्तकें रखने हेतु ताखे बने हुये थे।

युवान-च्वांग के विवरण से नालन्दा महाविहार की सुव्यवस्थित एवं सुरुचिपूर्ण वातावरण की पुष्टि होती है। चीनी यात्री लिखता है कि वहाँ पर गौतम बुद्ध, बोधिसत्व अवलोकितेश्वर, हारिती एवं तारा की प्रतिमाएं स्थापित थीं।[7] नालन्दा के उतवनन, में भी कांस्य ताम्र एवं प्रस्तर-निर्मित पुरुष एवं स्त्री प्रतिमाएं उपलब्ध हुई हैं जो देव-प्रतिमायें जान पड़ती हैं। गौतम बुद्ध की मूर्तियों में सबसे प्रसिद्ध एक कांस्य-निर्मित मूर्ति है। इसमें गौतम बुद्ध खड़ी हुई मुद्रा में प्रदर्शित है। एक दूसरे प्रस्तर में निर्मित मूर्ति में वे आसीन मुद्रा में दिखाये गये हैं। बोधिसत्व प्रतिमाओं में मैत्रेय, मंजुश्री और अवलोकितेश्वर की प्रतिमाएं महत्वपूर्ण हैं। देवियों में हारिती और तारा की प्रतिमाएं मिलती हैं। तलयान के प्रभाव के कारण यहाँ कुछ नए बौद्ध देवताओं की मूर्तियाँ भी स्थापित हुई। उदाहरणार्थ- मारीचि नामक देवता को त्रिभुज और अष्टभुज दिखाया गया है।[8] इसी प्रकार हेरुक नामक देवता की प्रतिमा को मुण्डमाल पहले हुये दिखाया गया है। कालान्तर में नालन्दा की इन कला-कृतियों का प्रभाव दक्षिण-पूर्व एशिया की बौद्ध कला पर भी दिखाई देता है।[9]

शैक्षिक गतिविधियाँ :

सम्राट हर्ष का शासनकाल नालन्दा विश्वविद्यालय के विकास का चर्मोत्कर्ष काल प्रतीत होता है। हर्ष के समय इस विश्वविद्यालय के प्रधान कुलपति शीलभद्र थे जो विभिन्न विषयों के ज्ञात थे।[10] युवान च्वांग ने यहाँ कुछ समय तक शिक्षण कार्य किया

था। चूँकि यहाँ विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती थी। अतः चीन, तिव्वत, कोरिया एवं तुषार आदि अनेक देशों के विद्यार्थी यहाँ अध्ययन के लिए आते थे।

युवान-च्वांग के विवरण से लगता है कि इस विश्वविद्यालय में प्रवेश के नियम कठिन था। प्रवेश चाहने वाले विद्यार्थियों की योग्यता तथा प्रतिभा की परीक्षा लेने के लिए वे दार्शनिक विषयों एवं जटिल समस्याओं का कठिन प्रश्न पूछते थे। युवान-च्वांग के अनुसार केवल बीस प्रतिशत विद्यार्थी ही प्रवेश परीक्षा में सफल ही पाते थे।[11] विभिन्न साक्ष्यों से यह स्पष्ट होता है कि नालन्दा में विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए ही आते थे।

नालन्दा विश्वविद्यालय की ख्याति का एक महत्वपूर्ण कारण यहाँ पर लब्ध प्रतिष्ठित शिक्षकों की उपस्थिति थी। उल्लेखनीय है कि यहाँ के प्रतिष्ठित विद्वानों में कांची के धर्मपाल, बंगाल के शीलभद्र, वल्लभी के गुणमति एवं स्थिरमति विश्वविद्यालय में अध्यापक का कार्य करते थे। यहाँ के आचार्य चन्द्रपाल बौद्धधर्म के कतिपय सिद्धान्तों के प्रवर्तन के कारण प्रसिद्ध था।[12] नालन्दा वि0वि0 के कतिपय आचार्यों ने चीन एवं तिव्वत जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया। इनमें धर्मदेव, प्रभामित्र का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। शुभाकर सिंह 8वीं शताब्दी में चीन गया एवं अनेक बौद्ध ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद किया था। धर्मदेव 10वीं शताब्दी में चीन गया था। उसने महायान ग्रन्थ सुखावतीव्यूह का चीनी भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया।[13]

हुईयीह कोरिया का रहने वाला था। वह नालन्दा में रहकर अध्ययन करता रहा और वहीं रहते हुए उसकी मृत्यु भी हुई। उसने अपने हाथ से लिखे गये कुछ ग्रन्थों को नालन्दा विश्वविद्यालय को समर्पित किया था।[14] हुयेनचाओं चीन से तिव्वत होता हुआ नालन्दा आया था। नालन्दा में रहते हुए उसने बौद्ध ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। चीन लौटने पर वहाँ के सम्राट ने उसे सम्मानित किया।[15] हुईताओं ने नालन्दा में रहते हुये दस वर्षों तक बौद्ध साहित्य का अध्ययन किया।[16] तंग नामक चीनी यात्री महायान मतालम्बी था। वह समुद्र मार्ग से भारत आया था। सबसे पहले उसने कुछ समय तक ताम्रलिप्ति में रुककर संस्कृत भाषा का अध्ययन किया। इसके बाद नालन्दा आकर उसने बौद्ध ग्रन्थों का अध्ययन करते हुये महायान बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का ज्ञान अर्जित किया।[17]

नालन्दा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन पद्धति पर भी युवान-च्वांग ने किचिंत प्रकाश डाला है। इस विश्वविद्यालय में स्वाध्याय और चिन्तन के अतिरिक्त विचार-विमर्श और वाद-विवाद के माध्यम से सहपठन भी होता था। नालन्दा का पाठ्यक्रम उच्च श्रेणी का था। यहाँ न केवल बौद्ध धर्म की शिक्षा दी जाती थी अपितु ब्राह्मण ग्रन्थों का पठन-पाठन होता था।[18] इस दृष्टि से वैदिक और पौराणिक साहित्य के अतिरिक्त हेतु विद्या, शब्द विद्या, चिकित्सा शास्त्र, योगशास्त्र, न्याय, कोश, विभाषा तथा अर्थ विद्या का उल्लेख किया जा सकता है।[19] युवान-च्वांग के अनुसार नालन्दा में महायान तथा बौद्ध धर्म की 18 शाखाओं से सम्बन्धित ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता था। चीनी यात्री के अनुसार इसके अतिरिक्त हेतु विद्या, शब्द विद्या, चिकित्सा विद्या, अथर्ववेद, साख्यदर्शन तथा अन्य विविध विद्या से सम्बन्धित साहित्य भी यहाँ उपलब्ध था। जिसका अध्ययन जिज्ञासु विद्यार्थी करते थे।[20]

नालन्दा से बौद्ध विद्या, विशेषतः तांत्रिक बौद्ध धर्म का ज्ञान अर्जित करने वाले अनेक लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों ने 8 वीं एवं 10वीं शदी के बीच तिब्बत में जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया। इनमें शान्तरक्षित का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने वाद-न्याय वृत्ति विपन्चतार्थ तथा तत्व संग्रह नामक ग्रन्थों की रचना की थी। इन्होंने तिब्बत में जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार किया। शान्तरक्षित के अतिरिक्त तांत्रिक बौद्ध धर्म के विद्वानों में पद्मसम्भव कमलशील और बुद्धकीर्ति के नाम भी उल्लेखनीय हैं। इन सभी ने तिब्बत में तांत्रिक बौद्ध धर्म के प्रसार में योगदान दिया।

शिक्षण कार्य के सुविधा के लिए नालन्दा में एक विशाल पुस्तकालय की स्थापना की गयी थी। इसमें विभिन्न शास्त्रों के ग्रन्थ एकत्र थे। इन ग्रन्थों की प्रतिलिपि तैयार करने के लिए बहुत से चीनी विद्यार्थी नालन्दा में रूकते थे। इत्सिंग ने नालन्दा में चार सौ पुस्तकों का प्रतिलेख तैयार किया था।[21] अध्ययन एवं अनुवाद के लिए उसे नालन्दा में दस वर्षों तक रुकना पड़ा था। चीनी लेखक के अनुसार यहाँ का पुस्तकालय धर्मगंज के नाम से विख्यात था। इसमें तीन विशाल भवन निर्मित थे जो रत्नाकर रत्नोदधि और रत्नरन्जक नाम से जाने जाते थे। इस पुस्तकालय में दुर्लभ पुस्तकों का संग्रह था। जिनके आकर्षण में भारत के दूसरे क्षेत्रों के विद्वान भी यहाँ आते थे।[22]

हर्षोत्तर काल में किसी केन्द्रीय राजनीतिक सत्ता के अभाव तथा उचित संरक्षण के अभाव में नालन्दा विद्या का ह्रास प्रारम्भ हो गया। तिब्बती कथाओं में नालन्दा महाविहार के ह्रास का कारण तुरुष्कों का आक्रमण बताया गया है। जैसा कि पहले संकेत किया जा चुका है कि तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने 1200 ईस्वी के लगभग नालन्दा का विध्वंश किया। वज्रयान एवं सहजयान में अनेक गुहा साधनायें प्रचलित हुई। तांत्रिक क्रियाएँ सामाजिक मानदण्डों के प्रतिकूल थी। इनके कारण बौद्ध धर्म की लोकप्रियता में कमी आयी। वस्तुतः बौद्ध विहार ही बौद्ध धर्म एवं शिक्षा केन्द्र थे। तुर्क आक्रमणकारियों ने इन विहारों में न केवल

भीषण रक्तपात किया वरन् बौद्ध ग्रन्थों सहित इन्हें जला भी डाला। अनेक भिक्षुओं ने नेपाल, तिब्बत, बंगाल और कामरुप के पर्वतीय क्षेत्रों में शरण लिया और इस प्रकार नालन्दा ही नहीं अन्य अनेक बौद्ध शिक्षा केन्द्र भी विस्मृति के गर्त में विलीन हो गये।

निष्कर्ष :

इस प्रकार यह विश्वविद्यालय लगभग 800 वर्षों तक आस्तित्व में बना रहा परन्तु अनपढ़, असभ्य एवं बर्बर जाति के अतातायी शासकों ने इस प्राचीन धरोहर को समाप्त कर दिया। स्थानिय लोगों का मानना है कि यह विश्वविद्यालय लगभग छः महीने तक जलता रहा। इससे स्पष्ट हो जाता है कि यह विश्वविद्यालय निश्चित रूप सें न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र था।

सन्दर्भ सूची :

1. मज्झिम निकाय 1 पृष्ठ 377
2. मुकर्जी, राधाकुमुद - ऐन्श्येण्ट इण्डियन एजूकेशन नई दिल्ली 1947 पृष्ठ 557
3. वाटर्स 2 पृष्ठ 164
4. वाटर्स 2 पृ. 164
5. एपिग्राफिया इण्डिया 20 4
6. इत्सिंग पृ. 154
7. वाटर्स 2 174
8. मुकर्जी, पूर्व उद्धृत ग्रन्थ, पृ. 584
9. वही, पृ. 585
10. वाटर्स, 2, पृ. 165
11. वाटर्स, 2, पृ. 165
12. वही
13. मुकर्जी, पूर्व उद्धृत ग्रन्थ, पृ. 578
14. मुकर्जी, पूर्व उद्धृत ग्रन्थ, पृ. 579
15. वागची, इण्डिया एण्ड चाइना, पृ. 76
16. मुकर्जी, पूर्व उद्धृत ग्रन्थ, पृ. 580
17. वही
18. अल्टेकर, ए.एस. एजूकेशन इन एन्श्येण्ट इण्डिया पृ. 123
19. वही
20. लाइफ, पृ. 121
21. अल्टेकर, ए.एस., पूर्व उद्धृत ग्रन्थ, पृ. 123
22. वाटर्स, 2, पृ. 180